ओ३म्

आर्य प्रतिनिधि

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का पाक्षिक मुखपत्र

दिसम्बर 2018 (प्रथम)

Email : aryapsharyana@yahoo.in

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

Visit us : www.apsharyana.org

मासिक सत्संग में अपने विचार रखते आचार्य सर्वमित्र आर्य साथ में हैं सभा प्रधान मा० रामपाल आर्य व उपस्थित आर्य जन।

विश्व मुक्केबाजी प्रतियोगिता में रजत पदक जीतने पर चहल का सम्मान करते हुए आचार्य सर्वमित्र आर्य।

मासिक सत्संग में अपने भजन रखते हुए बहन कल्याणी।

दान हेतु बैंक खाता

ACCOUNT NAME - ARYA PRATINIDHI SABHA HARYANA

BANK NAME - PNB JHAJJAR ROAD ROHTAK

Account No. - 0406000100426205

IFSC - PUNB0040600

MICR - 124024002

सृष्टि संवत् 1,96,08,53,119
विक्रम संवत् 2075
दयानन्दाब्द 195

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
की
मुख-पत्रिका

वर्ष 14 अंक 21

सम्पादक :
उमेद शर्मा

पत्रिका-शुल्क

देश में
वार्षिक-200 रुपये आजीवन-2000 रुपये

विदेश में
वार्षिक शुल्क 100 डॉलर
आजीवन 400 डॉलर

पत्रिका का स्वामित्व

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा (रजि०)
सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ,
गोहाना रोड, रोहतक-124001

सम्पादक-मण्डल

1. आचार्य सोमदेव
2. डॉ० जगदेव विद्यालंकार
3. श्री चन्द्रभान सैनी

सम्पादकीय विभाग

सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक
सम्पर्क सूत्र-
चलभाष :-
मो० 89013 87993, 7082783793

॥ ओ३म् ॥

आध्यात्मिक, सामाजिक, राष्ट्रीय चिन्तन एवं वैदिक जीवन मूल्यों की पाक्षिक पत्रिका

आर्य प्रतिनिधि

दिसम्बर, 2018 (प्रथम)
1 से 15 दिसम्बर, 2018 तक

इस अंक में....

1.	जिज्ञासा-विमर्श (जीवात्मा)	2
2.	क्या मैं महत्त्वाकांक्षी होने के कारण पागल तो नहीं हूँ ?	4
3.	वर्णाश्रम की संक्षिप्त व्याख्या	7
4.	प्रेरक वचन	8
5.	शिक्षा व्यवस्था और वैदिक संस्कृति	9
6.	आत्मनिर्माण सबसे बड़ा पुरुषार्थ है	10
7.	विद्यार्थी ऐसे करें तैयारी	11
8.	ब्रह्मचर्य एवं आर्यसमाज के अनूठे नुस्खे	12
9.	भारत देश और चुनाव	13
10.	नैमित्तिक (असाधारण) अधिवेशन का एजेण्डा (कार्यसूची)	14
11.	समाचार-प्रभाग	15

आर्य प्रतिनिधि पाक्षिक पत्रिका के प्रसार में सहयोग दें

'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक उलट-पलटकर रख देने लायक नहीं, बल्कि गंभीरतापूर्वक पढ़ने योग्य पत्रिका है। यदि आप इसके पाठक बनेंगे तो हमें विश्वास है कि पसन्द भी करेंगे और चाहेंगे कि इसे अन्य लोग भी पढ़ें। कृपया अपने जैसे गम्भीर पाठकों से 'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक पत्रिका की चर्चा करें, उन्हें इसका ग्राहक बनने के लिए प्रेरित करके ऋषि ऋण से अनृण होवें।

'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक का वार्षिक शुल्क 200/- रुपये एवं आजीवन शुल्क 2000/- रुपये है।

आप उपरोक्त राशि 'आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा' दयानन्दमठ रोहतक के नाम से बैंक ड्राफ्ट/मनीऑर्डर द्वारा भिजवाकर सदस्य बन सकते हैं। —सम्पादक

जिज्ञासा-विमर्श (जीवात्मा)

❑ आचार्य सोमदेव, ऋषि उद्यान, अजमेर

गतांक से आगे....

(घ) ईश्वर अनन्त, असीम है, परन्तु आत्मा ससीम है, इसलिए अणुस्वरूप होने के कारण उसकी कुछ न कुछ

लम्बाई-चौड़ाई तो होगी ही, इसलिए क्या उसे हम साकार नहीं कह सकते, क्योंकि उसकी सीमाएँ हैं? निराकार-साकार की परिभाषा क्या है?

(ङ) पंच भौतिक तत्त्वों में से एक आकाश भी है और भौतिक तत्त्व प्रकृति के परमाणुओं से बनते हैं, जिनसे पृथ्वी, सूर्यादि पूरा जगत् बनता है। यदि आकाश को निराकार कहा जाए तो अभाव से भाव कैसे बनेगा? यदि आकाश साकार है तो 'ओ३म् खम् ब्रह्म' क्यों कहते हैं। कृपया समाधान करने का कष्ट करें।

—इन्द्रसिंह, पूर्व एस.डी.एम. एवं पूर्व न्यायाधीश, 29, नई अनाजमण्डी, भिवानी (हरयाणा)

समाधान-आपने जो अपनी पीड़ा कही है, वह युक्तियुक्त है। निश्चित्त रूप से जब एक ही बिन्दु पर दो विद्वान् भिन्न-भिन्न विचार प्रकट करते हैं तो सामान्यजन में भ्रान्ति उत्पन्न होती है। वह दोनों के प्रति विश्वास का भाव रखता है, ऐसा होते हुए वह सामान्य जन किसको नकारे वा किसको स्वीकारें? इस विषय में हमारा निवेदन है कि जब-जब ऐसी परिस्थिति बने तब-तब यह अवश्य देख लें कि किस विद्वान् की बात ऋषिसम्मत है और किसकी बातें ऋषियों से मेल नहीं रख पा रही। दोनों में से जिस किसी की बात ऋषियों से प्रमाणित हो, उसी विद्वान् की बात को सामान्य जन स्वीकार करें, अन्य की नहीं। अस्तु।

अब मैं आपके एक-एक बिन्दु पर विचार करते हुए समाधान लिखता हूँ—

(क) जिज्ञासा 9 के समाधान में मैंने आत्मा का मुख्य स्थान इसलिए बताया, क्योंकि जिज्ञासु आत्मा-परमात्मा को जानना चाहता है, सो इन दोनों का ज्ञान महर्षि दयानन्द के अनुसार हृदय प्रदेश में ही होता है। जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति में आत्मा के जो स्थान जिस उपनिषद् में कहे हैं, वे स्थान युक्ति व ऋषि दयानन्द के मन्तव्य से मेल नहीं रखते। ब्रह्मोपनिषद् में लिखा है—

नेत्रस्थं जागरितं विद्यात् कण्ठे स्वप्नं समाविशेत्।
सुषुप्तं हृदयस्थं तु तुरीयं मुर्ध्नि संस्थितम्॥

जाग्रत अवस्था में आत्मा को नेत्र में जानें, स्वप्न में कण्ठ में रहता है, सुषुप्ति में हृदयस्थ रहता है और तुरीय अवस्था में आत्मा मूर्धा में निवास करता है।

महर्षि दयानन्द ने दश उपनिषदों को प्रमाण माना है, ग्यारहवें श्वेताश्वतर के प्रमाण भी महर्षि ने अपने ग्रन्थों में कहे हैं, इसलिए इस उपनिषद् को भी मिलाकर ग्यारह उपनिषदें प्रामाणिक हैं। यह ब्रह्मोपनिषद् इन ग्यारह से अतिरिक्त है। इस उपनिषद् में पौराणिकता से युक्त बातें भी कही गई हैं जो कि आर्षानुकूल नहीं हैं।

उपरोक्त श्लोक में आत्मा के कहे गए स्थान कितने युक्त हैं, आप करके देखें। जागते हुए हमें भय, दुःख, अशान्ति वा प्रसन्नता की अनुभूति आँखों में होती है या ऋषि द्वारा वर्णित हृदय में? जब ये सारी अनुभूतियाँ हृदय में होती हैं तो आत्मा को वहीं मानना होगा, अर्थात् आत्मा का निवास स्थान हृदय है, इसलिए मैंने उक्त समाधान में लिखा कि आत्मा का मुख्य निवास स्थान हृदय है। इसी प्रकार स्वप्न में भय अथवा प्रसन्नता की अनुभूति कहाँ होती है, उसको देखकर विचार करें। वह अनुभूति भी हृदय में ही मिलेगी, क्योंकि जहाँ आत्मा है, वहीं उसी स्थान पर प्रसन्नता-अप्रसन्नता की अनुभूति वह करता है। इस प्रकार यह कहना असंगत न होगा कि आत्मा का मूल निवास स्थान हृदय है।

(ख) यदि आत्मा स्थान बदलता है तो हमें पता क्यों नहीं चलता? इसमें मैं इतना ही कहूँगा कि यह व्यवस्था ईश्वराधीन है। ईश्वर ने ऐसी व्यवस्था कर रखी है कि आत्मा स्थान बदलता है। यहाँ व्यवस्था ईश्वर की है और संचालक स्वयं आत्मा है।

स्थान बदलता है तो हमें पता क्यों नहीं चलता? इसको तो आप छोड़िए! कितनी सारी स्थूल बातों का भी हमें पता नहीं चल पा रहा। कैसे हमारे अन्दर भोजन का विखण्डन हो रहा है, उससे रक्तादि का निर्माण कैसे हो रहा है, हमारे पूरे शरीर के ऊपर रोम-बाल कितने हैं, नेत्र की संरचना कैसी है? और भी बहुत सारी स्थूल बातों को हम नहीं जान पा रहे, जान पाते। और फिर आत्मा का विषय तो अति सूक्ष्म है। हाँ, हो सकता है, इस स्थान वाली स्थिति को योगी लोग जान लेते हों।

(ग) आत्मा निराकार है वा साकार? मैंने अपने समाधान में आत्मा को निराकार लिखा। मेरे ऐसा लिखने पर आपने आर्ष प्रमाण मांगा है। मैं आपको आर्ष प्रमाण देने से पहले निवेदन पूर्वक पूछता हूँ कि क्या आपने साकार मानने वालों से और साकार के विषय में कोई एक-आध आर्ष प्रमाण प्राप्त किया? अस्तु। आत्मा निराकार है—इसके लिए मैंने पहले भी तीन आर्ष प्रमाण दिये थे। अब फिर लिखता हूँ— सत्यार्थप्रकाश, प्रकाशक-सत्यधर्म प्रकाशन, शोधकर्त्ता समीक्षक-सम्पादक व भाष्यकार-डॉ. सुरेन्द्रकुमार, पृष्ठ 557 व सत्यार्थप्रकाश, प्रकाशक-परोपकारिणी सभा, अजमेर, संस्करण 40वाँ, पृष्ठ 551।

(1) "बदला दिये जावेंगे कर्मानुसार॥ और प्याले हैं भरे हुए॥ जिस दिन खड़े होंगे रूह और फ़रिश्ते सफ़ बाँधकर॥ मं० 7/सि० 30/सू० 78/आ० 26/34/38। समीक्षा- यदि कर्मानुसार फल दिया जाता है तो.... और **रूह निराकार** होने से वहाँ खड़ी क्योंकर हो सकेगी?" सत्यार्थप्रकाश, समुल्लास-14

(2) "इसी प्रकार भक्तों की उपासना के लिए ईश्वर का कुछ आकार होना चाहिए, ऐसा भी कुछ लोग कहते हैं, परन्तु यह कहना भी ठीक नहीं है, क्योंकि शरीर स्थित **जो जीव है, वह भी आकार रहित है,** यह सब कोई मानते हैं.... प्रत्यक्ष कभी न देखते हुए भी केवल गुणानुवादों ही से सद्भावना और पूज्य बुद्धि मनुष्य के विषय में रखते हैं।" देखें पूना प्रवचन व्या० 1

(3) "**प्रश्न**-मूर्त पदार्थों के बिना ध्यान कैसे करते बनेगा?

उत्तर-शब्द का आकार नहीं तो भी शब्द ध्यान में आता है वा नहीं? आकाश का आकार नहीं तो भी आकाश का ज्ञान करने में आता है वा नहीं? **जीव का आकार नहीं** तो भी जीव का ध्यान होता है वा नहीं....।" पूना प्रवचन, व्या० 4 इन सभी स्थलों पर महर्षि ने आत्मा को निराकार लिखा और कहा है। महर्षि की इन बातों की कोई अवहेलना कर आत्मा साकार माने मनवावे तो उसका कोई क्या कर सकता है?

(घ) आत्मा ससीम, अणुस्वरूप है, इस कारण उसकी कुछ न कुछ तो लम्बाई-चौड़ाई होगी ही, इसलिए उसको साकार कह सकते हैं। यह कहने वाला इसी कारण उसको साकार मानता है तो वह मानता रहे, क्योंकि ऐसा मानने वाला साकार-निराकार की परिभाषा ही नहीं जानता। वह तो महत् स्वरूप को निराकार और अणुस्वरूप को साकार मानता है, जो कि इस आधार पर साकार, निराकार की परिभाषा ठीक नहीं है।

(1) साकार वह है जो प्रकृति से बना हुआ है, इससे अतिरिक्त निराकार।

(2) साकार वह जिसमें रूप, रस, गन्ध आदि पांच गुण प्रकट हों, इससे भिन्न अर्थात् जिसमें ये पांचों प्रकट न हों, वह निराकार।

(3) साकार वह जिसमें रूप गुण प्रकट रूप में हो, इससे भिन्न निराकार।

उपरोक्त साकार-निराकार की किसी भी परिभाषा से आत्मा साकार सिद्ध नहीं हो रहा और यदि इन परिभाषाओं की अवहेलना करके कोई व्यक्ति आत्मा को साकार मानता है तो आत्मा सदा नित्य और चेतन सिद्ध न हो पायेगा जो कि वह सदा नित्य और चेतन है, इसलिए उपरोक्त ऋषि प्रमाणों व साकार-निराकार की परिभाषा के अनुसार आत्मा साकार नहीं, अपितु निराकार ही है।

(ङ) आकाश को ऋषि दो प्रकार का मानते हैं, एक- जो शब्द तन्मात्रा से बना है, दूसरा-जो अवकाश रूप आकाश है। उपरोक्त आकाश की परिभाषा तीन के आधार पर देखेंगे तो यह शब्द सूक्ष्म भूत से निर्मित आकाश भी निराकार कहलायेगा और दूसरा जो अवकाश रूप आकाश है वह तो है ही निराकार। यदि आप इस परिभाषा तीन को न मानकर एक को माने तो भी कोई बाधा नहीं आयेगी, क्योंकि अवकाश रूप आकाश तो निराकार है ही। यदि आप निराकार आकाश को लेकर '**ओ३म् खं ब्रह्म**' को घटाना चाहते हैं तो इस प्रकार आपकी बात घट जायेगी।

किन्तु यहाँ '**ओ३म् खं ब्रह्म**' में साकार निराकार को लेकर बात नहीं कही जा रही है, यहाँ तो ब्रह्म की विशालता को कहा जा रहा है कि वह ब्रह्म आकाश के समान व्यापक है, विशाल है, बड़ा है। यहाँ यह नहीं कहा जा रहा कि वह ब्रह्म आकाश के समान निराकार है। इस प्रकार यहाँ ब्रह्म की व्यापकता को जो आकाश की उपमा देकर कहा है, वह उपमा दोनों आकाश से कही जा सकती है, क्योंकि दोनों ही आकाश व्यापक हैं।

क्रमशः अगले अंक में....

क्या मैं महत्त्वाकांक्षी होने के कारण पागल तो नहीं हूँ?

❑ कन्हैयालाल आर्य, उपप्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, रोहतक

जो भी महत्त्वाकांक्षी होता है उसे एक न एक दिन उस कुत्ते की भांति पागल होना पड़ता है जिसकी कथा मैं आज आपको सुनाने जा रहा हूँ।

बनारस का एक कुत्ता महत्त्वाकांक्षी होने के कारण पागल हो गया। मनुष्यों की भांति पशु भी पागल हो जाता है। परन्तु पशु तो कोई-कोई पागल होता है परन्तु महत्त्वाकांक्षी मनुष्य तो पागलपन की सारी सीमाएँ लांघ जाता है। मनुष्यों के साथ रहते पशुओं में भी ऐसे पागलपन की बुरी आदतें आ जाती हैं। एक बार की बात है कि बनारस में एक नेता के घर में एक कुत्ते ने निवास किया, उसकी बुद्धि भी नेता की भांति बिगड़ गई। वह नेता के साथ-साथ रहते-रहते और नेता के समाचार-पत्रों में फोटो छपते देखते-देखते उसका भी मन होने लगा कि मेरी भी फोटो समाचार-पत्रों में छपनी चाहिए। उसने गांव के दो-चार कुत्तों को जाकर कहा कि मुझे भी नेता बनाओ और मुझे भी दिल्ली भेजो। कुत्ते हँसने लगे। कुत्तों ने कहा, ''मित्र! यह मनुष्यों की बुरी आदत तुम में कब से आ गई?'' उसने अन्य पांच-दस कुत्तों को अपनी भावना से अवगत कराया परन्तु उन सबने न केवल उसकी खिल्ली उड़ाई बल्कि उसे कहा, ''मित्र! तू अपनी बुद्धि ठीक कर ले। यह बीमारी मनुष्यों की है, हम लोगों को इस बीमारी का शिकार नहीं होना है।''

वह बनारस का कुत्ता अपने साथी कुत्तों की बात सुनकर कुछ हतोत्साहित तो हुआ परन्तु उसने दृढ़ निश्चय कर रखा था कि वह जब तक दिल्ली नहीं जायेगा उसके फोटो समाचार-पत्रों में कैसे छपेंगे? वह दिल्ली तो जाना चाहता था परन्तु साधारण यात्री की भांति नहीं बल्कि एक नेता के रूप में। वह सोचता कि यदि ये कुत्ते मुझे अपना नेता मान लें, नेता मानकर मुझे चुन लें, फिर यदि ये मुझे दिल्ली भेजें तो मेरा सम्मान अधिक होगा परन्तु ये मेरे मित्र कुत्ते तो उल्टा मुझे नेता चुनने की बजाय मेरी मूर्खता पर हँसते रहते हैं।

एक रात्रि की बात है कि उस कुत्ते का मालिक जो स्वयं एक नेता था वह अर्ध-निद्रा में सोया हुआ था तो वह कुत्ता नेताजी के पास गया और अपने आगे के दोनों पंजे ऊपर उठाकर (हाथ जोड़ने की मुद्रा में) कहा, ''मेरे मालिक! मैं भी दिल्ली जाना चाहता हूँ। मैं भी आपकी संगति में रहकर समाचार-पत्रों में अपनी फोटो छपवाना चाहता हूँ। कृपा करके मुझे भी नेता बनने का उपाय बता दो ताकि मैं भी दिल्ली पहुँच जाऊँ। मेरे साथी कुत्ते मेरी इस बात को सुनकर हँस पड़ते हैं और इसे मूर्खता मानते हैं। अब आप ही मुझ पर कृपा करो और मुझे नेता बनने का उपाय बताओ।''

नेताजी अर्ध-निद्रा में थे। नेताजी ने जब अपने स्वामिभक्त कुत्ते की बात सुनी तो उसने कहा, ''बेटे! दिल्ली जाना कोई सरल कार्य नहीं है। वहाँ तक पहुँचने के लिए न जाने कितने पापड़ बेलने पड़ते हैं। तेरे वश की बात नहीं है। जा अपना काम कर।'' कुत्ता भी दृढ़ निश्चय कर चुका था और अपने स्वामी से बार-बार आग्रह करने लगा। उसके इस निश्चय से प्रभावित होकर उस नेताजी ने कुत्ते से कहा, ''मेरे प्यारे स्वामिभक्त कुत्ते! प्रत्येक व्यक्ति दिल्ली नहीं जा सकता। इसके कुछ रहस्य हैं। यह कोई मजाक नहीं है कि तुमने सोचा और तुम दिल्ली पहुँच गये। अरे दिल्ली पहुँचने की यात्रा बड़ी कठिन है। मैं इसे असम्भव तो नहीं कहता परन्तु इस मार्ग में पग-पग पर बाधायें हैं। यदि तू दिल्ली जाना ही चाहता है क्योंकि तू एक साधारण कुत्ता तो नहीं, तू एक जाने-माने नेता का कुत्ता है, बड़े सम्मानित नेता का कुत्ता है, तू मेरा कुत्ता है, मैं तुझे दिल्ली पहुँचने के उपाय बता रहा हूँ—

प्रथम अपने शहर के सभी कुत्तों को यह अफवाह और समाचार फैलाना प्रारम्भ कर दो कि कुत्तों की जाति खतरे में है। जैसे कि हम लोग ऐसी झूठी अफवाहें फैलाते हैं कि इस्लाम खतरे में है, हिन्दुत्व खतरे में है, जाट, गूजर, राजपूत खतरे में हैं। कोई कहता है कि भारत खतरे में है, पाकिस्तान के आतंकवादी पाकिस्तान खतरे में है, इस प्रकार की अफवाहें फैलाते हैं। इसी प्रकार राजनीति का पहला सूत्र है कि लोगों में खतरे होने का समाचार इतनी तीव्र गति से फैलाओ कि लोग गोयबल्ज़ जैसे झूठे व्यक्ति की सौ बार बोलने से सत्य मान लेते थे उसी प्रकार तुम्हें यह अफवाह फैलानी होगी कि कुत्तों की जाति खतरे में है। अपनी साथी कुत्तों से यह कहना कि नगर निगम का मेयर यह सोच रहा है कि कुत्तों को विष दिलाकर मरवा दिया जाये। यह मनुष्य जाति के लोग कुत्तों द्वारा की गई स्वामिभक्ति को भुला रहे हैं और हमारे शत्रु बनकर विष देना चाहते हैं। जाओ! अपने कुत्तों में अधिक से

अधिक इस प्रचार को करो।'' कुत्ते ने कहा, ''मेरे स्वामी! आप कितने अच्छे हैं। यह विचार मेरे मन में क्यों नहीं आया? आप महान् हैं, आप जैसे नेता ही हमारा मार्गदर्शन करेंगे तो मैं शीघ्र ही दिल्ली पहुँच जाऊँगा।''

प्रात:काल हुआ। वह कुत्ता अपनी साथी कुत्तों के पास पहुँचा और उन कुत्तों को समझाना प्रारम्भ कर दिया। अब वह अपने आपको नेता बनाने की बात नहीं करता था बल्कि उस कुत्तों की जाति का रखवाला (संरक्षक) बनने की बात कहकर उनकी भावनाओं से खेलते हुए कहने लगा, ''मित्रों! मैंने यह संकल्प कर लिया है कि चाहे मेरा जीवन रहे या न रहे परन्तु मैं कुत्तों की जाति को बचाकर रहूँगा।'' इस प्रकार और भी कई बातें उस कुत्ते के स्वामी नेताजी ने उसे समझाई।

द्वितीय-यदि कुत्तों के छोटे बच्चे (पिल्ले) मिल जायें तो उन्हें कहना कि बड़े-बड़े कुत्ते यह नहीं चाहते कि तुम बड़े होकर उनका स्थान लो, छोटे कुत्तों को बूढ़े कुत्तों के विरुद्ध भड़काना। यदि कॉलेज में काम करने वाले कुत्ते मिलें तो उन्हें कहना कि तुम्हारा भविष्य खतरे में है। तुम कितने भी प्रशिक्षित हो जाओ यह सरकार तुम्हें नौकरी नहीं देगी। बड़े बूढ़ों से शक्ति छीननी अति आवश्यक है। पिल्लों को अलग, युवाओं को अलग, बूढ़ों को अलग-अलग समझाना कि तुम्हारा अस्तित्व खतरे में है और उन्हें कहना, ''मित्रो! मैंने तो कमर कस ली है, दृढ़ निश्चय कर लिया है, मैं तो आने वाली पीढ़ी की सेवा करता रहूँगा, मैं तुम्हारा सेवक हूँ, इस प्रकार की कई झूठी-सच्ची कहानियाँ सुनाकर उनके मस्तिष्क में विद्रोह की भावना को भड़काते रहना। यदि कोई बुद्धिमान् कुत्ता तुम्हारे विरुद्ध जाने का प्रयास करे तो उसे अपनी दूरदृष्टि से या तो चुप करा देना या फिर उसे मरवा देना अब यह तो तुम्हारे विवेक पर निर्भर करता है। इतना तो कम से कम मेरी संगत में रहने से तुम्हें पता चल ही गया होगा।''

तृतीय-यदि कुत्तों की स्त्रियां मिल जायें तो उनसे कहना, ''देवियो! तुम्हें भी कुत्तों के बराबर समान अधिकार मिलने चाहियें। तुम पीछे मत रहो। आज समान अधिकार का युग है। पूरे विश्व में आज स्त्रियों ने पुरुषों के समान अधिकार प्राप्त कर लिये हैं। तुम कब तक इन कुत्तों की अधीनता में रहोगी। तुम्हें भी अपने अधिकार प्राप्त करने के लिए विद्रोह करना होगा। तुम्हें भी क्रान्ति के मार्ग पर चलना होगा। मैं तो नारी जाति को आपके अधिकार दिलवाकर रहूँगा चाहे कुत्ते मेरे इस कदम से मेरे विरोधी हो जायेंगे परन्तु मैं उनके विरोध को देख लूंगा। मैं तो नारी जाति का सच्चा सेवक हूँ। मैं तो आपके अधिकारों के लिए आजीवन लगा रहूँगा चाहे मेरा जीवन समाप्त हो जाये परन्तु मैं आपको अधिकार दिलवाकर रहूँगा।''

चतुर्थ-यदि गली के निर्धन कुत्ते मिल जायें तो उन्हें कोठियों में रहने वाले धनी कुत्तों के विरुद्ध भड़काना और उन्हें साम्यवाद का पाठ पढ़ाना। उन्हें कहना कि परमात्मा ने हम सबको इस कुत्ते की जाति में जन्म दिया तो हमें भी वही सुविधायें मिलनी चाहिए जो इन धनी कुत्तों को मिलती हैं। यदि धनी कुत्ते मिल जायें तो उन्हें समझाना कि आप सावधान हो जाइये और उन्हें कहना कि यह गली के निर्धन कुत्ते तुम्हारी सुविधाओं से ईर्ष्या करने लगे हैं। वे तुम्हें प्राप्त होने वाली सुविधाओं को समाप्त करने के लिए आन्दोलन प्रारम्भ कर रहे हैं, तुम भी अपना संगठन बना लो। तुम घबराना नहीं मैं जब तक हूँ तुम्हारी सुविधाओं पर आंच नहीं आने दूँगा। इस प्रकार अलग-अलग उन्हें भड़का कर प्रत्येक स्थान पर अपने अस्तित्व को बढ़ाना ताकि दोनों प्रकार (गली व कोठी) के कुत्ते आपको अपना संरक्षक मानने लगें।''

अपनी स्वामी की इतनी अच्छी शिक्षाओं को सुन-सुनकर कुछ उस कुत्ते की बुद्धि भी चलने लगी थी। उसने अपने स्वामी से कहा, ''स्वामी! यदि ये निर्धन (गली के) और धनी (कोठियों वाले) कुत्ते आपस में मिल जायें तो उस समय मुझे क्या करना होगा?'' कुत्ते की इस समझदारी वाली बात सुनकर उस कुत्ते के स्वामी ने उसे बहुत उत्तम सुझाव दिया जो इस प्रकार है—

कुत्ते के स्वामी ने कहा, ''तू बड़ा भोला है। पहले तो उन्हें कभी मिलने मत देना, यदि वे मिल भी जायें तो सर्वोदय की बात करना, सबके उदय की बात करना। सबका साथ सबका विकास का राग अलापना प्रारम्भ कर देना।'' उन्हें कहना, ''हम गली के निर्धन कुत्ते का भी उदय चाहते हैं और कोठियों वाले धनी कुत्तों की सुविधाओं का विरोध नहीं करते हैं, हम चोर कुत्ते का भी उदय चाहते हैं, हम साहूकार कुत्ते का भी उदय चाहते हैं। हम तो सबका भला चाहते हैं, परन्तु ध्यान रखना यह उपाय अन्तिम है अन्यथा इन्हें आपस में लड़ाते ही रहना।''

अर्ध-निद्रा में बेचारे नेता से यह बात निकल गई। नेता कुछ कच्चा रहा होगा, नहीं तो पक्का नेता तो नींद में भी सच्ची बात नहीं बोलता।

वह कुत्ता अपने स्वामी द्वारा सुझावों पर विचार करने लगा। वह सोचने लगा कि यह कार्य तो कठिन नहीं है। मैं

व्यर्थ में परेशान हो रहा था। उसी रात्रि उसने अपना कार्य प्रारम्भ कर दिया। बनारस के कुत्तों में हड़कम्प मच गया। सभी कुत्ते घबरा गये। सभी को अपनी जान खतरे में लगने लगी। सभी भयभीत हो गये। तब वे सभी इसी बनारस के कुत्ते से प्रार्थना करने लगे, ''हमे बचाओ! अब तुम ही हमारे नेता हो। तुम हम सब के प्रतिनिधि बनकर दिल्ली चले जाओ।'' कुत्ता अपने स्वामी की चतुराई की बातें सुन-सुनकर वह भी मक्कार हो गया था। वह उन साथी कुत्तों को कहता, ''भाइयो! मैं तो आपकी सेवा करने के लिए आपको जगा रहा था।'' इस प्रकार कहकर वह ऊपरी मन से मना करता था परन्तु उसका वास्तविक लक्ष्य तो दिल्ली पहुँचने का था। अब उसे अपना लक्ष्य निकट आता दिख रहा था उसने भी खादी की टोपी पहननी आरम्भ कर दी। वह हाथ जोड़कर कहने लगा, ''मित्रो! मैं तो जनता का सेवक हूँ। मुझे दिल्ली जाने से क्या मतलब? मैं दिल्ली जाकर क्या करूँगा? मैं तो यहाँ रहकर आपकी सेवा करना चाहता हूँ। मैंने तो केवल आपको आपके अधिकारों का स्मरण कराना था, करा दिया। मुझे दिल्ली जाकर क्या करना है?'' परन्तु जितना वह अस्वीकार करता, उतना ही अधिक उसके साथी कुत्तों ने यह कहना प्रारम्भ कर दिया, ''हमारा नेता कैसा हो...वहतेरे जैसा हो।'' वे सब उसको प्रार्थना करने लगे, उसके गले में फूल-मालाएँ डालने लगे। कई छुट्टभईया उसके गीत गाने लगे, उसके समर्थन में रैलियाँ निकालने लगे और उसे विवश करने लगे कि वह हमारा प्रतिनिधि बनकर अवश्य दिल्ली जाये। अन्ततः विवश होकर वह कुत्ता कहने लगा, ''मित्रो! मैंने अपना कार्य किया है। मैंने आप पर कोई एहसान नहीं किया है, मैंने कुत्ते धर्म को अपनाया है। मैंने तो केवल आपकी खोई हुई शक्ति को स्मरण कराया है। यदि तुम सब मुझे इतना ही विवश कर रहे हो तो मैं दिल्ली जाने की स्वीकृति आपको देता हूँ।'' बस अन्य कुत्तों ने ज्यों ही यह सुना तो उस कुत्ते के समर्थन में जय-जय करके उद्घोष करने लगे। चाहे वह कुत्ता अपनी योजना सफलीभूत होते देख रहा था परन्तु ऊपर-ऊपर से अपनी विवशता बता रहा था। अन्ततः यह कुत्ता दिल्ली अपने साथियों का प्रतिनिधि बनकर जाने को उद्यत हो गया।

बनारस के कुत्तों ने दिल्ली के कुत्तों को समाचार दिया कि हमारा चुना हुआ नेता, हम सबका प्रिय नेता दिल्ली आ रहा है। उसका यथोचित सम्मान किया जाये। दिल्ली के कुत्ते अपने साथी नेता के स्वागत के लिए दिन-रात एक करने लगे। अब तक तो मनुष्य नेताओं स्वागत एवं सुरक्षा करते-करते ऊब चुके थे। वे इस बात से प्रसन्न थे कि अब उन का अपना भी कोई नेता होगा जो उनके अधिकारों के लिए दिल्ली की संसद में बैठकर कानूनों को बनवाएगा। दिल्ली के कुत्तों ने बनारस के उस नेता के स्वागत की पूरी तैयारी करनी प्रारम्भ कर दी। सब स्थानों पर उसके स्वागत द्वार बनवाने प्रारम्भ कर दिये। दिल्ली के कुत्तों ने बनारस के कुत्तों से जानकारी ली और उन्हें पता चला कि सम्भवतः उसे 15 दिन का समय बनारस से दिल्ली आने में लगेगा, क्योंकि उसे यह मनुष्य लोग वाहन तो देनें नहीं, अतः उसे पैदल ही जाना होगा। अतः बनारस के नेता कुत्ते ने अपनी यात्रा बनारस से पैदल ही प्रारम्भ की। बनारस के कुत्तों ने उसे भावभीनी विदाई दी।

यह क्या? दिल्ली के कुत्ते बड़े आश्चर्य में पड़ गये जिस नेता कुत्ते को बनारस से दिल्ली पहुँचने में 15 दिन लगने थे वह सात दिन में ही दिल्ली पहुँच गया। दिल्ली के कुत्ते अभी उनके स्वागत की पूर्ण तैयारी भी न कर सके थे और बनारस के कुत्तों का नेता इतनी शीघ्र पहुँच गया तो दिल्ली के कुत्तों ने इतनी शीघ्र पहुँचने का कारण पूछा। बनारस के नेता कुत्ते ने जो उत्तर दिया, वह सब हम सब की ओछी क्रियाओं का एक उदाहरण है। बनारस के नेता कुत्ते ने जो कहा, वह सुनिये।

उस नेता कुत्ते ने कहा, ''कुछ मत पूछो, जो मुझ पर बीती उसे मैं ही जानता हूँ। मैंने जब बनारस छोड़ा तो बनारस के कुत्तों ने मुझे बनारस की सीमा के बाहर तक छोड़ दिया। ज्योंही दूसरे जिले तथा गांव की सीमा में पहुँचा, वहाँ के कुत्ते मेरे पीछे पड़ गये, उन्होंने मुझे ठहरने नहीं दिया। वे दूसरे गांव तक छोड़ भी नहीं पाये थे, दूसरे गांव के कुत्ते मेरे पीछे पड़ गये। दिल्ली तक मेरे पीछे किसी न किसी गांव के कुत्ते पड़ते रहे। वे अपने गांव की सीमा तक छोड़कर लौट भी नहीं पाते थे कि दूसरे गांव के कुत्ते मेरे पीछे पड़ जाते थे। मैं जान बचाता हुआ किसी तरह भागा हुआ चला आया हूँ। बीच में विश्राम बिल्कुल नहीं कर सका, अतः 15 दिन की बजाय सात दिनों में दिल्ली पहुँच गया हूँ। परन्तु मैं अधिक बातचीत नहीं कर सकूँगा। मेरी श्वासें उखड़ रही हैं, मैं मरने के निकट पहुंच चुका हूँ।'' दिल्ली के कुत्तों ने कहा, ''घबराने की कोई आवश्यकता नहीं है। अब तुम दिल्ली पहुँच ही गये हो तो मरने के पश्चात् तुम्हारी समाधि भी अन्य नेताओं की तरह बना दी जाएगी और प्रत्येक वर्ष कोई न कोई नेता तेरी समाधि

क्रमशः पृष्ठ 15 पर......

वर्णाश्रम की संक्षिप्त व्याख्या

❑ खुशहालचन्द्र आर्य, 180 महात्मागांधी रोड, (दो तल्ला) कोलकाता-7

वैदिक धर्म में मनुष्य के चार स्तम्भ कहलाए जाते हैं, जिनका सही रूप में प्रयोग किया जावे तो समाज, राष्ट्र व व्यक्ति विशेष की प्रगति व उत्थान होना निश्चित है। किसी समाज व राष्ट्र को सुचारु रूप से चलाने के लिए ये

आधारशिला है। वे हैं—(1) वर्णाश्रम, (2) पंचमहायज्ञ, (3) सोलह संस्कार, (4) अष्टांग योग। यदि कोई व्यक्ति समाज, राष्ट्र व पूरा विश्व इन चार कार्यों को सुव्यवस्थित ढंग से अपने जीवन में अपना लेवे तो उसकी उन्नति व समृद्धि होना आवश्यक है।

यदि कोई मनुष्य अपने जीवन में अपने वर्ण तथा अपने आश्रम का कर्त्तव्य भाव व निष्ठा से पालन करे, साथ ही पंचमहायज्ञों व सोलह संस्कारों का विधिवत् प्रयोग करे तथा अष्टांग योग के आठ अंग यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, ध्यान, धारणा करते हुए समाधि अवस्था में ईश्वर के परम आनन्द की अनुभूति करेगा और मृत्यु के बाद ईश्वर के सान्निध्य में रहकर मोक्ष के परमानन्द में विचरण करेगा, जो जीव का मनुष्य योनि में आकर मोक्ष पाने का परम कर्त्तव्य है, इसीलिए ईश्वर जीव को मनुष्य योनि में भेजता है जो जीव की अन्तिम योनि है। जिस राष्ट के निवासी इन चारों स्तम्भों को अपने जीवन में लागू कर लेवे तो वह राष्ट्र शीघ्र ही उन्नति व समृद्धि को प्राप्त करते हुए 'विश्वगुरु' के उच्च स्थान को सुशोभित कर सकेगा।

इस लेख में हम केवल वर्णाश्रम का ही संक्षिप्त व्याख्या करेंगे जो इसी भांति हैं—

वर्णाश्रम-वर्णाश्रम में दो शब्दों का समावेश है। पहला है वर्ण, दूसरा है आश्रम। वर्ण राष्ट्र व समाज से सम्बन्ध रखता है और आश्रम व्यक्ति के जीवन से। वर्ण का अर्थ होता है किसी वस्तु या किसी व्यवस्था का वर्णन करना यानि उसके ग्रहण करके अपने समाज व राष्ट्र को सुचारु रूप से चलाना। ईश्वर ने भी यजुर्वेद में वर्ण-व्यवस्था का एक मन्त्र द्वारा संकेत किया है जिसके अनुसार ही हमारे ऋषि-मुनियों ने समाज में वर्ण-व्यवस्था की स्थापना की है। मन्त्र इसी भांति है—

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहुराजन्यः कृतः।
ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रोऽअजायत॥

(यजु॰ 31.11)

इस मन्त्र में वर्ण चार बताए गए हैं जिससे समाज व राष्ट्र सुचारु रूप से चल सके। वे हैं—ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। इन चार वर्णों के अलग-अलग कर्त्तव्य व कर्म हैं। ब्राह्मणों का कर्त्तव्य है वेदों व ऋषि-मुनियों के लिखे ग्रन्थों को स्वयं पढ़े तथा दूसरे वर्णों को पढ़ावे जिससे समाज से अज्ञान दूर हो सके। इस मन्त्र में ब्राह्मण की मुख से उपमा की है। समाज का वीर, साहसी, बलवान, वर्ग को क्षत्रिय वर्ण बताया गया है। इसकी उपमा हाथों से की गई है। इसका कर्त्तव्य है समाज से अन्याय दूर करना। तीसरा वर्ण है वैश्य जिसका काम है व्यापार करना, खेती करना व पशुपालन करना। इन कामों से वह समाज से अभाव दूर करता है। चौथा वर्ण है शूद्र, जो व्यक्ति पढ़ाने से भी नहीं पढ़े, ऊपर के तीनों काम न कर सके उसका कर्त्तव्य है कि ऊपर के तीनों वर्णों की सेवा करना, जिससे तीनों वर्ण अपना-अपना कर्त्तव्य भलीभांति कर सकें। यह वर्ण व्यवस्था आरम्भ में ऋषि-मुनियों ने मनुष्य की योग्यता के अनुसार कर्म के आधार पर बनाई थी। इनमें कोई छोटा-बड़ा नहीं था। सब एक समान थे। चारों वर्णों को धार्मिक व सामाजिक सुविधाएँ एक समान मिलती थीं। प्राचीनकाल में प्रत्येक बच्चों को गुरुकुल में पढ़ने के लिए जाना पड़ता था। विद्यार्थी की गुरुकुलीय विद्या समाप्त होने के बाद बच्चा अपने माँ-बाप के साथ घर जाने को तैयार होता था तब गुरुकुल का आचार्य जिसने बच्चे को कई वर्षों तक पढ़ाया था, वह उसकी योग्यता और व्यवहार को अच्छी प्रकार जान लिया था। वह उस बच्चे का वर्ण निर्धारित करता था। बच्चा अपने माँ-बाप व परिवार के साथ रहते हुए ही अपने वर्ण का पालन करता था और इस प्रकार समाज व राष्ट्र की व्यवस्था सुचारु रूप से चलती रहती थी। महाभारत तक यही वर्ण व्यवस्था कर्म के अनुसार चलती रही। महाभारत के महायुद्ध में अधिकतर विद्वान्, पुरोहित, आचार्य, योद्धा के समाप्त होने से, कम पढ़े लिखे, अविद्वान्, स्वार्थी ब्राह्मणों के हाथों

में समाज की पूरी बागडोर आ गई। उन्होंने समाज में हमेशा के लिए अपना प्रभाव बनाए रखने के लिए वर्ण को जाति बनवाकर कर्म व योग्यता से नहीं जन्म से जाति मानना आरम्भ कर दिया तभी से हिन्दू जाति का पतन आरम्भ हो गया। इसीलिए आज हिन्दू जाति की यह दुर्दशा हो गई और होती जा रही है। वर्ण व्यवस्था सुधारने से ही हिन्दू जाति की प्रगति होगी।

आश्रम व्यवस्था-आश्रम व्यवस्था, यह मनुष्य के व्यक्तिगत जीवन को सुदृढ़ व सुखमय बनाने वाली है। इस व्यवस्था के अनुसार मनुष्य की आयु एक सौ वर्ष निर्धारित की गई है और उसको चार भागों में बांटा है। पहला-ब्रह्मचर्याश्रम। यह जन्म से लेकर पच्चीस वर्ष तक होता है। इसमें जब बच्चा पांच या आठ साल का होने के बाद वह गुरुकुल जाकर पच्चीस वर्ष की आयु तक ब्रह्मचारी रहते हुए विद्याध्ययन करता है। इसमें ब्रह्मचारी वेदों के साथ-साथ ऋषि-मुनि कृत सब ग्रन्थों को पढ़कर अपनी बुद्धि को और ब्रह्मचर्य का पालन करके अपने शरीर को सुदृढ़ व बलवान बनाता है। इसके बाद पच्चीस वर्ष से पच्चास वर्ष की आयु तक गृहस्थ आश्रम अपने परिवार के पालन का आश्रम होता है। इसमें वह अपने परिवार का पालन करते हुए विद्वानों व अतिथियों को अपने घर पर बुलाकर समाज व राष्ट्र की सेवा करता है। यह आश्रम सबसे श्रेष्ठ व श्रेष्ठ कहलाता है। कारण, बाकी तीनों आश्रम इसी के ऊपर आश्रित हैं। इसके बाद पच्चास से पचहत्तर वर्ष तक वानप्रस्थ आश्रम होता है। इसमें व्यक्ति परिवार को छोड़कर समाज व राष्ट्र की सेवा निःस्वार्थ भाव से निःशुल्क करता है। इस आश्रम में अपनी धर्मपत्नी साथ भी रख सकता है और पत्नी को अपने बच्चों के साथ छोड़कर अकेला भी वानप्रस्थी बन सकता है। इसमें व्यक्ति को जितनी भी सामाजिक संस्थाएं हैं, जैसे गऊशाला, अनाथालय, गुरुकुल व आर्यसमाज मन्दिर आदि इनमें बिना कुछ लिए केवल भोजन पर सेवा करने का विधान है। इस आश्रम में बहुत कम व्यक्ति जा रहे हैं। यदि सभी गृहस्थी वानप्रस्थी बनने लग जावें तो समाज की सब संस्थाएं सुचारु रूप से चलने लगे और समाज व राष्ट्र बहुत उन्नति व समृद्धि करने लगें।

चौथा आश्रम संन्यास आश्रम है। इसकी अवधि पचहत्तर वर्ष से एक सौ वर्ष तक की तथा सौ से जितना अधिक तक जीवे तब तक की है। इस आश्रम में मनुष्य किसी एक परिवार, समाज व राष्ट्र में बंधकर नहीं रहता। वह विश्व के सभी के लिए पिता के समान बन जाता है। उसके लिए सम्पूर्ण विश्व एक परिवार है और सब लोग उसके पुत्र व पुत्रियों के समान हैं। संसार के सभी दुःख-सुख उस संन्यासी के दुःख-सुख बन जाते हैं पर वह सभी दुःख-सुखों से ऊपर उठ जाता है। उसका मुख्य कार्य बन जाता है कि वह परिवारों में जाकर सभी सदस्यों को वेदों की शिक्षा देकर उनके जीवन को सुखी बनावे। इसके बदले में वह उस परिवार में भोजन कर लेवे और इसी प्रकार उसका जीवन मृत्युपर्यन्त चलता रहे।

वर्णव्यवस्था में मैं लिखना भूल गया कि यह व्यवस्था एक कार्य विभाजन है। जैसे किसी बरात को भोजन खिलाते समय कई व्यक्ति उनको भोजन खिलाते हैं। कोई हलवा परोसता है तो कोई पूड़ी, कोई साग, कोई नमक और कोई पानी देता है। भोजन खिलाने के बाद सब मिलकर भोजन करते हैं। उनमें कोई छोटा-बड़ा नहीं है। यही बात वर्ण व्यवस्था में है। इसे भी कार्य विभाजन समझें।

इसी प्रकार चारों वर्णाश्रमों का संक्षिप्त परिचय दिया है। सुधी पाठकजन इससे लाभ उठावें तभी मेरा परिश्रम सफल होगा।

प्रेरक वचन

- जीवन में अधिकांश मुश्किलों के जिम्मेदार हम स्वयं होते हैं।
- हीनता की ग्रन्थी कभी आत्मविश्वास नहीं बढ़ने देती।
- आपके निर्णय के पलों में ही आपकी तकदीर आकार लेती है।
- जीवन को सार्थक बनाने के लिए उसका अर्थ समझना बेहद जरूरी है।
- हर व्यक्ति अपनी गलतियों को अनुभव का नाम देता है।
- अंधेरे की शिकायत करने से बेहतर है मोमबत्ती जलाना।
- डूबने के डर से कभी तैरना नहीं सीख सकते।
- विचार अपने नियत समय पर ही आकार लेता है।
- अहंकार ही पराजय का द्वार है।
- वर्तमान ही भविष्य की बुनियाद रखता है।
- साहित्य जीवन में रस घोलने वाला शास्त्र है।
- जो असफलताओं ने नहीं डरते वही विजेता बनते हैं।

संकलन— भलेराम आर्य, गांव सांघी, जिला रोहतक, मो० 9416972879

शिक्षा व्यवस्था और वैदिक संस्कृति

❑ डॉ. बिजेन्द्रपाल सिंह, चन्द्रलोक कॉलोनी, खुर्जा, मो० 8979794715

स्वतन्त्रता मिलने के पश्चात् देश में प्रतिदिन अपराधों में वृद्धि होती गई, सरकारें बदलती रहीं, उन्होंने अपराधों

पर नियंत्रण हेतु रक्षा, सुरक्षा बलों को अधिक महत्त्व दिया जो कि उचित है। राष्ट्र में बाहर व अन्दर से असुरक्षा को देखते हुए अस्त्र-शस्त्र से सुसज्जित सैन्य बलों व सेना का होना अत्यावश्यक है।

हम देख रहे हैं कि अनेक कानून अपराधों पर नियंत्रण हेतु बनते रहे हैं, फिर भी अपराध बढ़ रहे हैं। बलात्कारियों को पता है कि यौनापराधों पर क्या दण्ड है, फिर भी बलात्कार रुक नहीं रहे। हत्या पर मृत्युदण्ड व आजीवन कारावास है फिर भी हत्याकाण्ड हो रहे हैं। रिश्वतखोरी, घोटाले, घटतोली, मिलावट (खाद्यपदार्थों में), लूट, चोरी, जनता के ठगी, धोखाधड़ी, धर्म के नाम पर कुत्सित व घृणित कार्य करने वाले भी नए-नए पैदा होते जा रहे हैं। आशाराम, रामरहीम, रामपाल जैसे कारागार की हवा खा रहे थे। आशु बाबा आ गया जिसका नाम आसिफ खान या दिल्ली में आध्यात्म विश्वविद्यालय में पापकर्म का अड्डा पकड़ा गया आदि-आदि।

ज्यूँ-ज्यूँ अपराधों की जांच बैठाई जाती है, दण्डात्मक कार्यवाही होती है, अपराध और भी बढ़ते जाते हैं, इस विषय पर आज बुद्धिजीवी वर्ग चुप्पी साधे हुए हैं। कोई बात नहीं करता। केवल एक आर्यजन हैं जिन्हें इसकी चिन्ता है।

देश की स्वतन्त्रता के पश्चात् हमें इस समस्या का उपचार सर्वप्रथम करना चाहिए था जो नहीं किया गया। पौराणिक भाई तो एक बात ही कहते रहते हैं कि ईश्वर अवतार लेगा।

राम-कृष्ण दोबारा आयेंगे वही कुछ करेंगे कोई कहता है कि कलयुग में ऐसा ही होता है। अब सतयुग आएगा तभी शान्ति होगी। यह सब बातें निरर्थक हैं। पाखण्डपूर्ण व अज्ञानतापूर्ण हैं। ऐसा होता तो बृहत्तर भारत की बड़ी सीमाएं थीं सिमटकर आज कितनी छोटी हो गई, कितनी कम हो गई वह न होती।

हमने इस मूल समस्या पर ध्यान नहीं दिया। हाँ, विदेशी आक्रान्ता इसका कारण जानते थे। उन्होंने इसलिए ही सर्वप्रथम भारत की संस्कृति के वाहक, प्रचारक उन शिक्षा संस्थानों को तोड़ा जहाँ से वैदिक ज्ञान की ज्योति निरन्तर प्रज्वलित होती थी। वह थे हमारे ऋषियों के आश्रम व गुरुकुल जहाँ लाखों, करोड़ों ब्रह्मचारी-ब्रह्मचारिणियाँ यज्ञोपवीत धारण कर वेद-वेदांगों की शिक्षा लेते थे और वहाँ से तपकर धनुर्धारी आदित्य ब्रह्मचारी राजा, सेनापति व सन्यासी होते थे और राष्ट्र हेतु समर्पित होते थे, जिनका जीवन परोपकार हेतु होता था।

आज हमें इस विषय पर पुनः विचार करना होगा। प्राचीन काल में राजा व राज्याधिकारी वेद-वेदांगों में विद्वान् होते थे। इसीलिए पाप व अत्याचार नहीं थे। आज भी हमें वही शिक्षा की वैदिक व्यवस्था लागू करनी होगी। यजुर्वेद में भी कहा है—

इमं देवाऽअसत्न सुबध्वं महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठायाय महते जान राज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय॥ (यजु० 9.40)

हे विद्वानो!, राजप्रजाजनो! तुम इस प्रकार के पुरुषों को बड़े चक्रवर्ती राज्य सबसे बड़े होने बड़े-बड़े विद्वानों से युक्त राज्य पालने और परम ऐश्वर्ययुक्त राज्य और धन के पालन के लिए सम्मति करके सर्वत्र पक्षपात रहित पूर्ण विद्या विनय युक्त सबके मित्र सभापति राजा को सर्वाधीश मान के सब भूगोल शत्रुरहित करो।

सत्यार्थप्रकाश के षष्ठ समुल्लास में भी कहा है कि "तीनों अर्थात् विद्यासभा, धर्मसभा और राज्यसभाओं में मूर्खों को कभी भर्ती न करें।"

महाराजा मनु ने भी लिखा है—

त्रैविद्येभ्यस्त्रयीं विद्यां दण्डनीतिं च शाश्वतीम्।
अन्वीक्षिकीं चात्मविद्यां वार्त्तारम्भांश्च लोकतः॥

(स०प्र० षष्ठ समु०)

राजा और राजसभा के सभासद् तब हो सकते हैं कि जब वे चारों वेदों की कर्मोपासना ज्ञानविद्याओं के जानने वालों से तीनों विद्या सनातन दण्डनीति न्यायविद्या आत्मविद्या अर्थात् परमात्मा के गुण-कर्म-स्वभाव रूप को यथावत्

जानने रूप ब्रह्मविद्या और लोक से वार्ताओं का आरम्भ सीखकर सभासद् वा सभापति हो सकें।

महाराजा मनु, विदुर आदि ने राज्यव्यवस्था का सम्यक् वर्णन किया है। मनुस्मृति व विदुरनीति सर्वविदित है और वेद, उपवेद, ब्राह्मण ग्रन्थ तथा उपनिषद् आदि सत्य शास्त्रों से हमें राजधर्म व सामाजिक ज्ञान-विज्ञान की शिक्षा मिलती है। आज यह विषय विद्यालयों के पाठ्यक्रमों में होने चाहिएं तभी तो समाज उन्नति की ओर चलेगा।

दूसरे राजा व अधिकारी वेद-वेदांगों के ज्ञाता हों, सत्याचारी हों, उन्हें ही तीन सभाओं में लिया जाये तभी राष्ट्र उन्नतिशील हो सकेगा। सड़क, बिजली, ऊँचे भवन, फ्लैट आदि तो आवश्यक हैं ही परन्तु साथ ही शिक्षा की वैदिक व्यवस्था हो, कोई अशिक्षित न हो, एक समान शिक्षा व्यवस्था हो। विद्यालयों में विद्यार्थियों के शिक्षा हेतु नियम दृढ़ता से लागू हों।

आज की शिक्षा ऐसी है कि उससे उच्चस्थ पदों के अनेक व्यक्ति घोटाले, भ्रष्टाचार, अन्धविश्वासों में लिप्त पाए जाते हैं। आचरण प्रधान शिक्षा होनी चाहिए। सत्याचरण आवश्यक है।

आज विद्यालय नगरों में कोलाहल के मध्य स्थित हैं। विद्यार्थी अनेक स्थानों पर होटल, रेस्टोरेण्ट, वार, डांसवार व मद्यशालाओं में भी जाते हैं। ऐसे में क्या अपना और क्या देश को उन्नतिशील बनायेंगे ? अनेक स्थानों पर अध्यापक-विद्यार्थी मद्यपान, मसाला, तम्बाकू व मादक द्रव्यों का सेवन करते हैं। वह भी ऊँची पदवीधारी होते हैं। ऐसा क्यों है ? कारण स्पष्ट है आज की शिक्षा में मानवता व चरित्र निर्माण के विषय में नहीं और न ही वैदिक शिक्षा है। संस्कृत व संस्कृति से दूर रखा जा रहा है। इसीलिए नैतिकता समाप्त होती जा रही है।

मैकाले की शिक्षा आज पूरे देश में हावी होती जा रही है। यदि इस ओर ध्यान न दिया गया तो भारत की जो संस्कृति थी, जो धर्म व मर्यादा थी, जिससे भारत विश्व में ब्रह्मचर्य प्रधान देश माना जाता था। सब मिट जाएगा। अत: आज ही भारतीय संस्कृति, वेद की शिक्षा व गुरुकुल प्रणाली पर ध्यान देना होगा तभी चारों ओर हो रहे अपराध स्वत: समाप्त होंगे। देश की उन्नति का मूल वैदिक संस्कृति है। इसे ही लाना होगा।

आत्मनिर्माण सबसे बड़ा पुरुषार्थ है

इस संसार में अनेक प्रकार के पुण्य-परमार्थ हैं। दूसरों की सेवा-सहायता करना पुण्य कार्य है, इससे कीर्ति, आत्मसंतोष तथा सद्गति की प्राप्ति होती है। इन सबसे बढ़कर एक पुण्य-परमार्थ है और वह है-'आत्मनिर्माण'। अपने दुर्गुणों को, विचारों को, कुसंस्कारों को, ईर्ष्या, तृष्णा, क्रोध, द्रोह, क्षेम, चिन्ता, भय एवं वासनाओं को विवेक की सहायता से आत्मज्ञान की अग्नि में जला देना ही हमारा धर्म है। अपने अज्ञान को दूर करके मन-मन्दिर में ज्ञान का दीपक जलाना, प्रभु की सच्ची भक्ति है। अपनी मानसिक-तुच्छता, दीनता, हीनता, दासता को हटाकर निर्भयता, सत्यता, पवित्रता एवं प्रसन्नता की आत्मिक प्रवृत्तियां बढ़ाना ही जीवन की महान् सफलता है।

आज संसार को सुख और शान्ति का धाम बनाने के लिए प्रयत्न तो हो रहा है, किन्तु मानवता की प्राप्ति के लिए जिस संयम और वशित्व की आवश्यकता है, उस ओर लोगों का ध्यान ही नहीं है। इसलिए संसार में सुख-शान्ति का साम्राज्य स्थापित करने के लिए आर्यसमाज बड़े पुरुषार्थ से प्रचार करता है कि सर्वप्रथम मनुष्य को मनुष्य बनना आवश्यक है। काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद और मात्सर्य के दुर्गुणों का विनाश किये बिना मनुष्य, मनुष्य नहीं बनता है। इस छह प्रकार की पशुता का विनाश करने से मानव-शरीर में मनुष्यता का जन्म होता है।

संसार का प्रत्येक मनुष्य अपना-अपना आत्मनिर्माण करे तो यह पृथ्वी स्वर्ग बन सकती है। फिर मनुष्यों को स्वर्ग जाने की इच्छा करने की नहीं, वरन् देवताओं को पृथ्वी पर आने की आवश्यकता अनुभव होगी। प्राचीन भारत वैदिक पथ का एक ज्वलन्त उदाहरण है। वेदज्ञान को आचरण में लाना ही सतयुग की उपमा है।

दूसरों की सेवा-सहायता करना पुण्य है, पर अपनी सेवा सहायता करना, इससे भी बड़ा पुण्य है। अपनी शारीरिक, मानसिक, आर्थिक, सामाजिक, नैतिक और आध्यात्मिक स्थिति को ऊँचा उठाना, अपने को एक आदर्श नागरिक बनाना, इतना बड़ा धर्म कार्य है कि जिसकी तुलना अन्य किसी भी पुण्य-परमार्थ से नहीं हो सकती।

—जगरूपसिंह छिक्कारा आर्य, म.नं. बी. 103 फ्लोवर 10, स्पेज परिवी सेक्टर-72, गुरुग्राम-122001 (हरयाणा)

विद्यार्थी ऐसे करें तैयारी

❑ प्राचार्य अभय आर्य, रोहतक

अब समय आ गया है कि जब विद्यार्थी वार्षिक परीक्षा को लक्ष्य करके तैयारी में जुट गए हैं। ऐसे समय में विशेषज्ञ

अपने-अपने ढंग से तनावमुक्त तैयारी के लिए सुझाव देते हैं। तनावमुक्त होकर तैयारी करने से सफलता भी मिलती है। उदाहरण मेरे सामने है। अभी जो N.D.A. (2018) का परिणाम आया उसमें हमारे विद्यार्थी आदर्श ने सफलता प्राप्त की। आदर्श ने पिछले वर्ष ही 11वीं कक्षा में आर्य बाल भारती विद्यालय पानीपत में प्रवेश लिया था। एक दिन शरीर से कुछ दुबला लेकिन दृढ़ सामान्य कद का एक बालक लगभग 20 फुट ऊँचे रस्सा बंधे पोल पर ऊपर चढ़कर बीम लगाने का अभ्यास कर रहा था। मैंने उसे अपने पास बुलाया। वह डरता हुआ आया। लेकिन मैंने उसका उत्साहवर्द्धन करते हुए उसे सावधानी वर्त्तने के लिए भी कहा व उसे रस्साकस्सी की टीम में सम्मिलित किया। तब से वह विजयी टीम का सदस्य रहा। मुझे याद है कि स्वतः प्रेरणा से उसने ग्रीष्मावकाश में लगने वाले 'बाल चरित्र निर्माण शिविर' में भी भाग लिया। पिछले दिनों इस बालक के सिर पर चोटी देखकर भी मुझे सुख मिला। दिनाङ्क 04.12.2018 को जब 12वीं कक्षा में गया तो पता लगा कि इसी लड़के ने N.D.A.-I की परीक्षा पास की है, यही लड़का आदर्श है। कक्षा में नियमित आना, न अलग से कोचिंग का प्रबन्ध, न कोई तनाव। यही स्थिति पिछले वर्ष तेजस्वी नाम के विद्यार्थी की थी जो हमारे उन 9 विद्यार्थियों में सम्मिलित था, जिन्होंने 10+2 (Medical) लड़कों के प्रथम बैच में ही P.M.T. की परीक्षा पास की थी।

अतः विद्यार्थियों को यही सन्देश है कि परीक्षा की तैयारी को तनाव रूप से न लेकर आनन्द के रूप में लें। इसकी गुत्थियां सुलझने से, इसका स्वरूप सामने आने से, इसको धारण करने से आनन्द ही तो होता है। अनेक विद्यार्थी ऐसे होते हैं जो तनाव नहीं लेते और श्रेणी में उच्च रहते हैं। ये देव श्रेणी के स्वभाव के होते हैं। पं० गुरुदत्त विद्यार्थी इसी श्रेणी के थे। कुछ विद्यार्थी ऐसे होते हैं जो उच्च श्रेणी को प्राप्त करते हैं, लेकिन तनाव ले लेते हैं और प्रायः उस स्तर पर नहीं पहुँच पाते जहाँ उन्हें पहुँचना है। इन्हें अपना स्वभाव सिद्ध करना चाहिए। यह भय मन में कदापि उत्पन्न न करें कि याद किया भूल जायेंगे। इसकी अपेक्षा उस विषय के सम्बन्ध में नई जानकारी प्राप्त करें। तनाव रहित होने का यह अर्थ कदापि नहीं कि पढ़ाई को कम कर दें। लेकिन कक्षा में नियमित रहते हुए, ग्रुप चर्चा (विषय सम्बन्धी) करते हुए, स्वाध्याय भी करना यही अर्थ तनाव रहित तैयारी से लेना चाहिए। यदि कक्षाएँ छोड़कर, ग्रुप चर्चा छोड़कर केवल स्वाध्याय ही करते रहे तो तनाव अवश्य होगा। बहुत उच्च स्तर का विद्यार्थी हो या निम्न स्तर का, दोनों N.C.E.R.T. अवश्य पढ़ें। सभी को वार्षिक परीक्षा की तैयारी के लिए शुभकामनाएँ।

शोक-समाचार

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के पूर्व भजनोपदेशक स्वामी देवानन्द उर्फ श्री दयानन्द आर्य, ग्राम सुल्तानपुर, सैक्टर-128, गौतमबुद्धनगर, नोएडा (उ०प्र०) का लगभग 83 वर्ष की आयु में दिनांक 03.12.2018 को आकस्मिक निधन हो गया वे अविवाहित थे। उन्होंने पं० शिवलाल जी पूर्व आचार्य गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ के सान्निध्य में रहकर शिक्षा प्राप्त की तथा गायन कला भी सीखी। युवावस्था से ही उन्होंने आर्यसमाज का प्रचार कार्य शुरू किया। वे 1980 से 1985 तक गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ में रहकर दिल्ली, फरीदाबाद तथा जमना पार के क्षेत्रों में आर्यसमाज का प्रचार कार्य करते रहे।

वर्ष 1986 में सभा में नियुक्त होने पर हरयाणा में प्रचार कार्य किया। वह 2015 में सभा से सेवानिवृत्त हुए। स्वामी जी अत्यन्त सरल स्वभाव के थे तथा उन्होंने सादगी पूर्ण जीवन व्यतीत किया।

परमपिता परमात्मा दिवंगत आत्मा को सद्गति देवे तथा उनके परिवारजनों को इस दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा उनके निधन पर हार्दिक शोक प्रकट करती है।

—ओमप्रकाश शास्त्री, मुख्य सभागणक

ब्रह्मचर्य एवं आर्यसमाज के अनूठे नुस्खे

❑ सूबेदार करतारसिंह आर्य सेवक आर्यसमाज गोहाना मण्डी (सोनीपत)

1. सदैव अपने आचार-विचारों को पवित्र रक्खें।
2. अपने निवास कक्ष में आदर्श ब्रह्मचारियों के चित्र लगायें।
3. भूलकर भी ठूँसकर भोजन न करें।
4. सोने से पूर्व व उठने के पश्चात् मूत्र विसर्जन करना न भूलें।
5. खट्टे, तीखे एवं चरपरे पदार्थों से यथासम्भव बचे रहें।
6. ब्रह्मचर्यप्रेमी को कदापि देर तक सोना चा जागना नहीं चाहिए।
7. कार्य न रहने पर भी अपने आपको किसी अच्छे विचारों में रक्खें।
8. कार्य, कारण एवं परिणाम का प्रतिक्षण विचार करें।

प्राचीनकाल में विद्यार्थी को ब्रह्मचारी कहते थे। अपनी ऊर्जा का संरक्षण कर उसे विद्याध्ययन में लगाना ही ब्रह्मचर्य का अर्थ है। इसके लिए नियमित दिनचर्या, व्यायाम, आसन, प्राणायाम, सात्त्विक भोजन, सुविचार अच्छे लोगों की संगति और ईश्वरभक्ति बहुत आवश्यक है। विद्यार्थी जीवन में ही शारीरिक स्वास्थ्य और बौद्धिक विकास होता है। विषयों का सेवन, अश्लील दृश्य, कामुकता के विचार, मादक पदार्थों का सेवन, नृत्य करना, विपरीत लिंगों के प्रति आकर्षण, फैशन आदि ब्रह्मचर्य के मार्ग में बाधा हैं। सादगी सदाचार की जननी है और शृंगार व्यभिचार का दूत है। इस आदर्श वाक्य का सदा स्मरण करना चाहिये।

पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित आज देश में नारी का यह हाल है—

नारियाँ आज ऐसी बनी मार हैं,
न लज्जा से जिनका सरोकार है।
होड फैशन की लगी है यहाँ,
थोड़े कपड़ों में नंगा बदन आज है॥

भारतीय काजिलों में लड़के लड़कियों के एक परिधान, हिप्पियों जैसी केश सज्जा, नाच क्लब, व्यसन विशाल धूम्रपान, मदिरापान सब पश्चिमीकरण की देन है। देश में हर वर्ष करोड़ों की बिक्री सिगरेट की हो रही है। शराब की बाजार भी करोड़ों की है। सिर्फ तम्बाकू की वजह से हर वर्ष लाखों मौतें होती हैं। सिगरेट, शराब दोनों मिलकर कैंसर को जन्म दे रहे हैं। उचित तो यह होगा कि हर वर्ष देश के लाखों लोगों की जान लेने वाले शराब व तम्बाकू की कम्पनियों के मालिकों के विरुद्ध हत्या का मुकदमा दर्ज हो।

सहशिक्षा, फैशन, सिनेमा, टी.वी., सिगरेट, बीड़ी, शराब तथा स्वास्थ्य व संयम का अभाव देश का सत्यानाश कर रहे हैं।

कार्य करो समाज का-स्वामी सोमानन्द (पं० नरेन्द्र) बताया करते थे कि स्वामी श्रद्धानन्द महाराज की भांति स्वतन्त्रानन्द जी महाराज अपने शिष्यों से कहा करते थे-**"रोटी खाओ घर की, गाली खाओ समाज की और काम करो ऋषि दयानन्द का।"**

उनका भाव यह था कि अपमानित्य भी होना पड़े तो भी लोक कल्याण के लिये भगवान के वेदज्ञान की पावन ज्योति से जग को जगमग करने का श्रेष्ठ कार्य करते चलो।

तपस्वी ही उद्धार कर सकता है-जातियों की निर्माण की विधि तो और ही है। जिस देश में सम्पन्न वर्ग के राष्ट्रनिर्माता होते हैं, संसार में उस मनुष्य जाति के बचने की कोई आशा नहीं है। गिरी हुई जाति केवल ऊँचे चरित्र से ही बच सकती है।

विदुरनीति-इन दो के गले में पत्थर बांधकर जल में डुबो देना चाहिए—(1) दान न देने वाले धनिक को तथा (2) तप-परिश्रम न करने वाले दरिद्र को।

समानव्यसनेषु मैत्री:-जिनका स्वभाव एकसा होता है, उन्हीं में मित्रता भी होती है। जैसे कि धर्मात्माओं की धर्मात्माओं, पण्डितों की पण्डितों, दुष्टों और व्यभिचारियों की व्यभिचारियों के साथ मित्रता होती है (चोर-चोर मौसेरे भाई), न कभी धर्मात्माओं का अधर्मात्माओं और न अधर्मात्माओं का धर्मात्माओं के साथ मेल हो सकता है।

प्रकृति मिले मन मिलत है, अनमिले न मिलाय।
दूध दही से जमत है, कांजी के कटि जाय॥

वैदिक दर्शन प्रार्थना, उपासना व पूजा का प्रयोजन आत्मशुद्धि मानता है। उपासना परमात्मा के लिये नहीं की जाती यह मनुष्य की शान्ति आत्मविश्वास, आत्मबल व उत्थान के लिये की जाती है। (महर्षि दयानन्द सरस्वती)

ये शिवरात्रि! अगर तू न आती।
तो न मिलता हमको दयानन्दसा मोती॥
अगर चूहे ने गड़बड़ की न होती।
तो दुनिया में वेदों की ज्योति न होती॥ क्रमशः

भारत देश और चुनाव

आजकल हमारे देश में छोटे और बड़े पांच राज्यों में विधानसभा के चुनाव होने हैं। इन चुनावों में देश के नेताओं की भूमिका अति महत्त्वपूर्ण है। दो दल इस देश में मुख्यरूप से बड़े दल हैं-भाजपा व कांग्रेस। दोनों दलों ने एक-दूसरे के आरोप व प्रत्यारोप लगाने में कोई भी कसर नहीं छोड़ते।

कोई किसी के नाम व जाति, धर्म व कारोबार सम्बन्धित आरोप लगाते हैं व इससे भी गिरावट तब होती है जब हमारे देश की महिला की तुलना रुपये के मुकाबले की जाती है। एक दल दूसरे दल के नेताओं ने ऐसे आरोप लगाए कि लिखना भी मुश्किल ही नहीं नामुमकिन है।

कोई सभी पार्टी के नेताओं से यह पूछे कि हमारे देश का सबसे प्राचीन नाम क्या है, तो बता पायेंगे ? हमारी सबसे प्राचीन पुस्तक क्या है ? हमारा धर्म कौन-सा है ? इन सब बातों का ज्ञान हमको किसने दिया था ? उस ऋषि का तुम कितना सम्मान करते हो। अगर वे सम्मान करते तो आज के नेता एक दूसरे की जाति व गोत्र व धर्म नहीं पूछते और जनता की भलाई की बात करते, मानव कल्याण की बात करते, विकास की बात करते, महंगाई की बात करते।

राष्ट्रपितामह, युगप्रवर्तक, गोभक्त, वेदरक्षक व राष्ट्रभक्त महर्षि देवदयानन्द ने हमें सर्वप्रथम बताया कि हमारे देश का प्राचीन नाम आर्यावर्त है अर्थात् हम सब आर्य हैं। वेद हमारी पुस्तक है और एक ही हम सबका धर्म है वैदिक धर्म और परमात्मा ने एक ही जाति बनाई है-मनुष्य जाति। एक ही परमात्मा है जिसका मुख्य नाम ओ३म् है और परमात्मा प्रत्येक जीवात्मा में विद्यमान है।

अगर हम रामायण काल को याद करें तो महर्षि वाल्मीकि जी लिखते हैं कि रामराज्य में प्रत्येक व्यक्ति यज्ञ करता था और सभी व्यक्ति आर्यों की भांति रहते थे अर्थात् हम सब आर्य थे। फिर महाभारत काल की दशा को पढ़ा जाये तो हमारा विनाश गंधार नरेश शकुनि ने किया। हमारे देश में कोई भी जुआ या ताश खेलने वाला व्यक्ति नहीं था। शकुनि ने नई परम्परा इस देश में चलाई, जो आज गांव व शहर में ताश खेलते हैं।

इसके उपरान्त हम आर्यावर्त देश के निवासी हुए और हम हिन्दू, मुसलमान, सिख, ईसाई आदि धर्मों तक सीमित न रहकर जात व गोत्र तक पहुँच गए हैं। किसी भी नेता को अगर मन्दिर दिखाई दे तो वह पूजा-अर्चना करता है। अगर मस्जिद दिखाई दे तो चादर चढ़ाते हैं। अर्थात् कोई धर्म के नाम पर, कोई जाति के नाम पर, कोई गोत्र के नाम पर राजा बनना चाहते हैं। अगर इनसे कोई पूछे कि क्या कभी लालबहादुर शास्त्री, चौ० चरणसिंह एवं मोरारजी देसाई, चौधरी देवीलाल ने कहा था कि मेरा व्यवसाय यह है और मेरी जाति ये है या मेरा गोत्र ये है, क्योंकि इन सबको देश का विकास सर्वप्रथम था। सब जानते हैं कि मर्यादापुरुषोत्तम श्रीराम का जन्म अयोध्या में हुआ था लेकिन श्रीरामजन्म भूमि की दशा क्या हो गई है ? इसका कारण भी नेताओं से ही पूछा जाना चाहिए।

अत: हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि हम आयावर्त देश के निवासी हैं। हम सब आर्य हैं। एक ही हमारा धर्म है-वैदिक धर्म। अपनी वाणी को संयम में रखते हुए देश की शिक्षा, आर्थिक व्यवस्था, महंगाई, रोजगार व उज्ज्वल भविष्य की बात करें।

—जगदीश आर्य, डीपीई,
आर्य बाल भारती पब्लिक स्कूल, पानीपत

आवश्यक सूचना

सभा से सम्बद्ध प्रदेश की समस्त आर्यसमाजों को सूचित किया जाता है कि अपने-अपने आर्यसमाजों में वेदप्रचार सप्ताह व वार्षिक उत्सव के कार्यक्रम उत्साह और भव्यता के साथ सम्पन्न करायें। सम्पन्न हुए कार्यक्रमों की सूचना फोटो सहित पूर्ण विवरण के साथ सभा कार्यालय को भेजें, जिससे 'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक पत्र में प्रकाशित किया जा सके। आप अपने समाचार सभा के Email : aryapsharyana@yahoo.in पर भी भेज सकते हैं। —संपादक

भूल-सुधार

'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक पत्रिका के वर्ष 14 अंक 20 नवम्बर द्वितीय में '**परोपकारिणी सभा अजमेर का त्रैवार्षिक चुनाव**' के समाचार पृष्ठ 16 पर भूलवश '**डॉ. सुरेन्द्र कुमार जी के पद में संरक्षक की जगह प्रधान**' छप गया है। कृपया पाठकगण '**डॉ. सुरेन्द्र कुमार जी संरक्षक**' ऐसा पढ़ें। इस असुविधा के लिए हमें खेद है। -सम्पादक

नैमित्तिक (असाधारण) अधिवेशन का एजेण्डा (कार्यसूची)

माननीय महोदय, नमस्ते। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का नैमित्तिक (असाधारण) अधिवेशन दिनांक 30 दिसम्बर 2018 रविवार को प्रात: 11 बजे गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ (सराय ख्वाजा) फरीदाबाद में होना निश्चित हुआ है। अत: आपसे निवेदन है कि समय पर पहुँचने का कष्ट करें।

विचारणीय विषय

1. दिवंगत आर्य नर-नारियों को श्रद्धांजलि।
2. गत साधारण सभा बैठक दिनांक 8 अप्रैल 2018 की कार्यवाही की सम्पुष्टि।
3. सभा के संविधान का परिवर्तित नियम-3 (पृष्ठ-3) व सभा के नियम-25 पृष्ठ 16 में उपनियम (7) व (8) के संवर्धन को अन्तरंग सभा बैठक दिनांक 4 नवम्बर 2018 के प्रस्ताव संख्या-5 की सम्पुष्टि पर विचार।
4. अन्य विषय सभा प्रधान जी की अनुमति से।

नोट-1. सभा के सभी प्रतिनिधि सदस्यों से अनुरोध है कि अपना पहचान-पत्र फोटो सहित, जैसे—वोटर कार्ड, सभा द्वारा जारी पहचान-पत्र, राशन कार्ड, ड्राइविंग लाइसेंस, पेन कार्ड आदि प्रमाणिक दस्तावेज साथ लाएं।

2. अपना एजेण्डा-पत्र अवश्य ही साथ लायें। इसके बिना सभा में प्रवेश नहीं हो सकेगा।

कार्यवाही अन्तरंग सभा बैठक दिनांक 4 नवम्बर 2018 के प्रस्ताव संख्या-5 की प्रतिलिपि

प्रस्ताव संख्या-5 के द्वारा सभा के संविधान में संशोधन व संवर्धन पर उपसमिति की रिपोर्ट पर विचार।

सभामन्त्री ने सभा के संविधान में संशोधन बारे उपसमिति की रिपोर्ट प्रस्तुत की। विचारविमर्श के पश्चात् संविधान का परिवर्तित नियम-3 (पृष्ठ 3) व नियम-25 पृष्ठ 16 पर उपनियम (7) व (8) के संवर्धन को सर्वसम्मति से पारित किया।

संविधान का पुराना नियम-3 (पृष्ठ 3)

(3) प्रत्येक नवीन "**साधारण सभा**" (जनरल हाउस) के निर्माण की व्यवस्था के लिए, जो "**आर्यसमाज**" अन्तरंग सभा द्वारा स्वीकृत एवं न्यून से न्यून दो वर्ष से सभा से सम्बद्ध हो और वेदप्रचार निधि के लिए प्रतिवर्ष न्यून से न्यून 1000 रुपये तथा अपनी समस्त वार्षिक आय एवं सदस्यता शुल्क की आय का दशांश एवं '**आर्य प्रतिनिधि**' साप्ताहिक समाचार पत्र का वार्षिक शुल्क तथा अन्तरंग सभा द्वारा निर्धारित अन्य देय सभा को देता हो, केवल उसे अधिकार प्राप्त होगा कि तीन वर्ष के लिए **अपने प्रथम 21 सभासदों पर एक तथा अगले प्रति 90 पर एक-एक प्रतिनिधि** अपने आर्यसमाज की साधारण सभा में निर्वाचित करके, प्रतिनिधि फार्म भरकर प्रतिनिधियों के नवीनतम दो फोटो सहित स्वीकृति हेतु भेजें। अन्तरंग द्वारा स्वीकृत होने के पश्चात् ही कोई भी प्रतिनिधि सभा के प्रतिनिधि के रूप में मान्य होगा।

संविधान का परिवर्तित नियम-3 (पृष्ठ 3)

(3) प्रत्येक नवीन "**साधारण सभा**" (जनरल हाउस) के निर्माण की व्यवस्था के लिए, जो "**आर्यसमाज**" अन्तरंग सभा द्वारा स्वीकृत एवं न्यून से न्यून दो वर्ष से सभा से सम्बद्ध हो और वेदप्रचार निधि के लिए प्रतिवर्ष न्यून से न्यून 1000 रुपये तथा अपनी समस्त वार्षिक आय एवं सदस्यता शुल्क की आय का दशांश एवं '**आर्य प्रतिनिधि**' पाक्षिक समाचार पत्र का वार्षिक शुल्क तथा अन्तरंग सभा द्वारा निर्धारित अन्य देय सभा को देता हो, केवल उसे अधिकार प्राप्त होगा कि तीन वर्ष के लिए **अपने प्रथम 11 सभासदों पर एक तथा अगले प्रति 20 पर एक-एक प्रतिनिधि** परन्तु प्रत्येक आर्यसमाज से 4 प्रतिनिधियों से अधिक प्रतिनिधि नहीं होंगे, अपने आर्यसमाज की साधारण सभा में निर्वाचित करके, प्रतिनिधि फार्म भरकर प्रतिनिधियों के नवीनतम दो फोटो सहित स्वीकृति हेतु भेजें। अन्तरंग द्वारा स्वीकृत होने के पश्चात् ही कोई भी प्रतिनिधि सभा के प्रतिनिधि के रूप में मान्य होगा।

(पृष्ठ-16) (25) "सभा के अन्य नियम" में जोड़ना-

(7) सभा का चुनाव त्रिवार्षिक होता है अत: सभा से सम्बद्ध आर्यसमाजों का चुनाव भी त्रिवार्षिक होगा।

(8) सभा से सम्बद्ध स्कूल प्रबन्धन की "स्थानीय प्रबन्धक समिति" की जगह "**स्कूल मैनेजमेंट कमेटी**" के नाम से गठित होगी।

—उमेद शर्मा, सभामंत्री

आर्य बाल भारती स्कूल का शानदार प्रदर्शन

आपको बड़े गर्व के साथ सूचित किया जाता है कि बाल भवन पानीपत में 16.10.2018 से 26.10.2018 तक जिला स्तरीय अलग-अलग प्रतियोगिताएं हुईं, जिसमें पानीपत जिला के सभी स्कूलों ने हिस्सा लिया। आर्य बाल भारती पब्लिक स्कूल के बच्चों ने भी बढ़चढ़कर भाग लिया और जीत हासिल की। 16.10.2018 को रंगोली और थाली-कलश सजावट (Thali Puian/Kalash Decoration) की प्रतियोगिता हुई। जिसमें सोनिया नाम की बच्ची ने थाली पूजन कलश सजावट में दूसरा स्थान प्राप्त किया। रंगोली में सुमित नाम के लड़के ने भी दूसरा स्थान प्राप्त किया। 17.10.2018 Decoration Contest ने मुस्कान नाम की बच्ची ने तीसरा स्थान प्राप्त किया। 19.10.18 को Sketching and Card Making प्रतियोगिता हुई जिसमें रिशिका नाम की छोटी बच्ची ने तीसरा स्थान प्राप्त किया और Sketching में Fine art की दोनों बच्चियाँ-हिमानी और अनमोल ने पूरे जिले में चौथा स्थान प्राप्त किया। 22.10.18 को दिया-कैंडल सजावत (Diya Candle Decoration) प्रतियोगिता में आर्य बाल भारती स्कूल की ईशिका नाम की बच्ची ने पहला स्थान प्राप्त किया और आरजू नाम की बच्ची ने तीसरा स्थान प्राप्त किया। पूरे जिले में चार स्थानों में से दो स्थान आर्य बाल भारती के दोनों बच्चियों ने ही प्राप्त किये। 25.10.18 को Face Painting प्रतियोगिता पूरे जिले में पहली बार हुई जिसमें भी आर्य बाल भारती विद्यालय की बच्ची शिप्रा ने दूसरा स्थान प्राप्त किया, जो कि किसी भी स्कूल के लिए बड़े गर्व की बात है। इतना ही नहीं, आर्य बाल भारती की बच्ची सोनिया ने राज्य स्तरीय प्रतियोगिता (State level Competition) में थाली पूजन और कलश सजावट में तीसरा स्थान प्राप्त किया। राज्य स्तरीय प्रतियोगिता को जीतना किसी भी स्कूल के लिए बड़े ही गर्व की बात होती है। Art and Craft Department में आयोजित हुई जितनी भी प्रतियोगिता में आर्य बाल भारती स्कूल के विद्यार्थी ने विजय प्राप्त की उनकी विजय का श्रेय कला अध्यापिका को जाता है। इतना ही नहीं Education Department में भी हमारा स्कूल पीछे नहीं रहा। 25.10.18 को (G.K. Quik Competition) हुआ जिसमें स्वीटी और जिज्ञासा नाम की दोनों बच्चियों ने पहला स्थान प्राप्त किया। इन दोनों बच्चियों ने भी पूरे जिले में पहला स्थान प्राप्त करके स्कूल का गौरव बढ़ाया।

क्या मैं महत्त्वाकांक्षी होने...पृष्ठ 6 का शेष...

पर फूल चढायेंगे और विदेशों से आये हुए नेता भी कभी-कभार तेरी समाधि को नमन करेंगे। यदि दिल्ली में आकर मरना भी सौभाग्य का चिह्न है।'' दिल्ली के कुत्तों की बातें से बनारस का नेता कुत्ता सन्तुष्ट-सा दिखाई दिया। उसने सोचा कि कम से कम दिल्ली पहुँचने का मेरा स्वप्न पूरा तो हुआ। इतना विचार करते ही एक जोर की हिचकी आई और वह बनारस के नेता कुत्ते के प्राणपखेरू उड़ गये।

बन्धुओ! यह बनारस की कुत्ते की कथा मात्र एक दृष्टान्त है, परन्तु वास्तविकता यह है कि हम भी कई प्रकार की महत्त्वांकाक्षायें समटे रहते हैं। उस पागल कुत्ते को तो केवल एक ही महत्त्वांकाक्षा थी और वह पागल हो गया। पागलपन ने उसके जीवनलीला ही समाप्त कर दी। परन्तु मैं और आप न जाने कितनी महत्त्वाकांक्षाओं के शिकार हैं। उस पागल कुत्ते को केवल दिल्ली पहुँचने (सत्ता, पद) प्राप्त करने की महत्त्वाकांक्षा थी परन्तु मुझे और आपको कभी पुत्र मोह परेशान करता है, कभी धन मोह, कभी पत्नी-पति मोह, कभी सम्पत्ति मोह और न जाने कौन-कौन से लोग मुझे और आपको उलझन में डालते रहते हैं। आइये! इन पागलपनों से निकलने का प्रयास करें। मैं मानता हूँ कि जैसे आजकल वातावरण बना हुआ है, एक दूसरे को पराजित करने के लिए प्रतियोगिता हो रही है, यह कठिन लगता है परन्तु असम्भव नहीं है। एक बार हम यदि दृढ़ निश्चय कर लें और महत्त्वाकांक्षी न बने, यज्ञ और योग का आश्रय ले लें, साधना के मार्ग को अपना लें और यजुर्वेद के इस मंत्रांश ''तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा'' (त्याग पूर्वक भोग करें) को अपने जीवन में अपना लें तो पागल होने से बच जायेंगे।

श्री रविन्द्र हसीजा एवं श्री धर्मवीर हसीजा जी को पितृशोक

पूज्य पिता श्री जयदेव हसीजा जी का देहदान कर उदाहरण प्रस्तुत किया

उद्योग जगत् के उभरते सितारे श्री रविन्द्र हसीजा एवं श्री धर्मवीर हसीजा जी के पिता श्री जयदेव हसीजा जी का निधन 30.11.2018 प्रातः 4 बजकर 50 मिनट पर हो गया। निधन के

समय आयु 88 वर्ष थी। श्री हसीजा जी एक धार्मिक विद्वान्, लेखक एवं उच्चकोटि के समाजसेवी थे। वे अपने पीछे दो पुत्रों रविन्द्र (पूनम) हसीजा, श्री धर्मवीर (नेहा) हसीजा, दो पुत्रियाँ श्रीमती शशि चान्दना, श्रीमती कमलेश (सुरेन्द्र) विग को छोड़कर गये हैं। उनके निधन के उपरान्त श्री जयदेव जी हसीजा जी की इच्छानुसार उनका देहदान किया गया। परिवार ने उनकी इच्छानुसार उनका देहदान दधीचि देहदान समिति दिल्ली के माध्यम से ई.एस.आई.सी. मैडिकल कालेज तथा हस्पताल नेशनल हाइवे नं० 3 एन.आई.टी. फरीदाबाद को किया गया।

30 नवम्बर 2018 को दोपहर 12 बजे शवयात्रा उनके निवास स्थान जी-14 साउथ सिटी-I गुरुग्राम से प्रारम्भ की गई। शवयात्रा में अनेक संगठनों के सदस्य, कार्यकर्त्ता, अधिकारी, अनेक गणमान्य व्यक्ति, सम्बन्धी एवं मित्रगण सम्मिलित हुए। ज्यों ही शवयात्रा घर से प्रारम्भ हुई वैसे ही ओ३म् ध्वनि, गायत्री मंत्र एवं महामृत्युञ्जय मंत्र की ध्वनि आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्द मठ रोहतक द्वारा भेजे गए वैदिक प्रचार रथ के माध्यम से उच्चरित हो रही थी। जैसे ही शवयात्रा आर्यसमाज वेद मन्दिर साउथ सिटी-I पहुँची वहाँ पर चलने वाले महर्षि दयानन्द सरस्वती प्राइमरी स्कूल के सभी छात्र एवं अध्यिापिकायें पंक्तिबद्ध होकर आंखें न किये हुए खड़े थे। आर्यसमाज वेद मन्दिर साउथ सिटी-I में वेदमन्त्रों के उच्चारण से श्री हसीजा जी का भौतिक शरीर दधीचि देहदान समिति दिल्ली के अधिकारियों को सौंपा गया। ज्यों ही यह भौतिक शरीर की यात्रा आर्यसमाज से एम्स के लिए प्रस्थान किया वहाँ उपस्थित छात्र-छात्राओं ने श्री हसीजा जी अमर रहे के नारों से गुंजायमान कर दिया। परिवार के इस पवित्र संकल्प की वहाँ पर उपस्थित जनसमुदाय केवल हसीजा परिवार की प्रशंसा कर रहा था, अपितु अपने मनों में मरणोपरान्त देहदान की इच्छा प्रकट कर रहा था।

श्री हसीजा जी आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ एवं फरुखनगर, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, परोपकारिणी सभा अजमेर, गुरुकुल झज्जर, भादस, वनवासी कल्याण आश्रम एवं असंख्य संगठनों के पदाधिकारी एवं सदस्य थे। आप एक उच्चकोटि के लेखक एवं स्वाध्यायी व्यक्ति थे। उन्होंने लगभग एक दर्जन पुस्तकों का लेखन कार्य किया है। उनकी अन्तिम पुस्तक 'पागल मन की उड़ानें' का विमोचन उनकी अनुपस्थिति में 3.12.2018 सोमवार को उनकी श्रद्धांजलि सभा में किया गया। वे जीवन के अन्तिम क्षणों तक समाजसेवा एवं लेखन कार्य से जुड़े रहे। वे इस समय आर्यसमाज वेद मन्दिर झाड़सा साउथ सिटी-I एवं महर्षि दयानन्द प्राइमरी स्कूल वेद मन्दिर साउथ सिटी-I के वरिष्ठ उपप्रधान के पद को सुशोभित कर रहे थे।

स्मरण रहे कि श्री जयदेव हसीजा जी यह संकल्प 18 फरवरी 2018 को श्री कन्हैयालाल आर्य शिवाजी नगर गुरुग्राम की माता श्रीमती जमुनादेवी आर्या के देहदान की श्रद्धांजलि सभा में अपने पुत्र श्री रविन्द्र हसीजा से अपने संकल्प को प्रकट कर दिया था। आर्टीमिस हस्पताल में रुग्ण रहने पर भी इसी दौरान वह अपने परिवार को देहदान की इच्छा प्रकट करते रहे। उनके इस संकल्प को साधुवाद। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति मिले और हसीजा परिवार एवं अन्य स्नेही सम्बन्धी, मित्रगण एवं कार्यकर्त्ताओं को इस दुःख को सहन करने की शक्ति मिले।

—कन्हैयालाल आर्य, उपप्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा,

आचार्य वेदव्रत शास्त्री का निधन

रोहतक। आचार्य वेदव्रत शास्त्री पूर्व मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का आकस्मिक निधन दिनांक 4.12.2018 को पीजीआई

रोहतक में हो गया। उनके निधन से आर्यसमाज में शोक की लहर छा गई। वेदव्रत शास्त्री जी जिनका जन्म राजस्थान के नूनिया गोठरा तहसील चिड़ावा जिला झुंझनूं में हुआ था। 86 वर्षीय वेदव्रत शास्त्री जी कुछ समय से अस्वस्थ थे और उन्हें इलाज के लिए पीजीआई रोहतक ले जा रहे थे, जहाँ पर डॉक्टर ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। वेदव्रत शास्त्री जी के बेटे विजय एवं विक्रम ने जानकारी देते हुए बताया कि प्रातःकाल जब उन्हें उपचार के लिए अस्पताल ले जाया जा रहा था तो स्नानघर में उन्हें दिल का दौरा पड़ा था। उनका अन्त्येष्टि संस्कार दिनांक 05.12.2018 को पूर्ण वैदिक रीति से गोहाना रोड रामबाग भूमि पर किया गया तथा शोक-सभा का आयोजन दिनांक 9.12.2018 को आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के बलिदान भवन में किया गया। उनके निधन पर हरियाणा के मुख्यमंत्री श्री मनोहरलाल खट्टर, सहाकारिता मंत्री श्री मनीष ग्रोवर, मनमोहन गोयल, अजय बंसल, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान मा० रामपाल आर्य, आचार्य विजयपाल गुरुकुल झज्जर, स्वामी प्रणवानन्द, डॉ. योगानन्द शास्त्री दिल्ली आदि तथा अनेक आर्यसमाज से जुड़े गुरुकुल व आर्य शिक्षण संस्थाओं के अधिकारियों के अलावा शहर के अनेक गणमान्य व्यक्तियों ने अपना शोक जताया। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा उनके निधन पर शोक प्रकट करते हुए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करती है कि दिवंगत आत्मा को अपने चरणों में स्थान दे और उनके परिवार को इस असह्य दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

ओ३म्

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

के तत्त्वावधान में

पूज्य आचार्य बलदेव जी की स्मृति पर आयोजित

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन

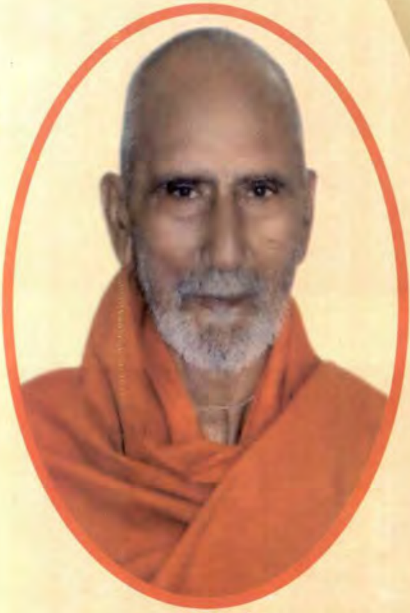

स्मृति शेष

आचार्य बलदेव जी

दिनांक 27 जनवरी 2019

समय प्रातः 9 बजे से

स्थान - दयानन्द मठ, रोहतक

आप सभी सपरिवार सादर आमंत्रित हैं।

सम्पर्क सूत्र- 8901387993, 9416874035, 9416503513, 9991996339

Postal Regn. - RTK/010/2017-19
RNI - HRHIN/2003/10425

प्रेषक :
मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
दयानन्द मठ, रोहतक
हरियाणा, 124001

श्री ....

पता ....

....

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा (रजि.) के स्वामित्व में मुद्रक, प्रकाशक उमेद शर्मा ने दुर्गेश्वरी प्रिंटर्स के लिए आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक से मुद्रित एवं कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ रोहतक-124001 से प्रकाशित।

- सम्पादक उमेद शर्मा